ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-4* May- 2021
Innovation The Research Concept

प्रवास और सामाजिक विकास

Migration and Social Development

Paper Submission: 04/05/2021, Date of Acceptance: 21/05/2021, Date of Publication: 23/05/2021

धनश्याम सैनी
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग,
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

संसार मे व्यक्तियों के जीवन को समग्र रूप से प्रभावित करने वाली शक्ति सामाजिक गतिशीलता है। यह गतिशीलता प्रवास के रूप मे सामने आती है जो बाध्यतावश या स्वर्णिम जीवन अवसर की तलाश मे होता है। आव्रजन–प्रवजन की प्रघटना विश्व के सभी समाजो मे प्राचिन काल से ही निरन्तर देखने को मिलती है। प्रवास विकास को प्रभावित करने वाला कारक है। विकास ऐसे परिवर्तनो को लक्षित करता है जो प्रगति की ओर उन्मुख होते है। सामाजिक विकास वह प्रकिया है समाज को इस योग्य बनाती है कि उसके सदस्यों की आवश्यकताएं पूरी हो सके। प्रवास का भारतीय ग्रामो मे सकारात्मक आर्थिक एंव सामाजिक परिणाम है। वर्तमान मे प्रवास सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक बना है। इन सब के बावजुद प्रवासी समुदाय की विभिन्न प्रकार की समस्याएं है । जिनका समाधान प्रशासकीय नीतियों एंव व्यवहारिक सुझावों द्वारा सम्भव है। यह अध्ययन पूर्व मे किए गऐ प्रवासी अध्ययनो के सारांश पर आधारित है। इसमे नवीनतम तथ्यो का समावेश है।

Social mobility is the force that affects the life of individuals in the world as a whole. This mobility manifests in the form of migration which is compulsive or in search of a golden life opportunity. The phenomenon of Immigration – Migration is seen continuously in all the societies of the world since ancient times. Migration is a factor affecting development.

Development targets changes that lead to progress. Social development is the process that enables society to meet the needs of its members. Migration has positive economic and social consequences in Indian villages. Today, migration has become an

Important component of social development. Despite all this, there are different types of problems of the migrant community, whose solution is possible through administrative policies and practical suggestions. This study is based on a summary of previous migrant studies and incorporates the latest elements.

मुख्य शब्द : सामाजिक गतिशीलता, आव्रजन–प्रवजन, प्रवास, प्रवास के स्वरूप, सामाजिक विकास, प्रवास के सामाजिक–आथिक प्रभाव, समस्याएं, समाधान। Social mobility, Immigration – Migration, types of Migration, Social development, Economic and social impact of migration, Problems, Solutions

प्रस्तावना

मानव संसार सदैव से ही सुख और दुख का प्रतिकात्मक सयोंग रहा है। सामाजिक गतिशीलता इसे निर्धारित करने वाली शक्ति है। प्रायः विश्व के सभी समाज एंव उनके लोग किसी न किसी प्रकार से अवश्य गतिशील रहे हैं। यह गतिशीलता आर्थिक सुलभता के अवसर, प्रशासकीय नौकरी, व्यापार आदि के कारण होती है। मनुष्य की मूल प्रवृति रही है कि वह बेहतर जीवन की खोज में या कभी – कभी बाध्यतावश एक स्थान से दुसरे स्थान प्रवास करता हैं। आव्रजन एंव प्रवजन की प्रक्रिया प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समाजो मे भी निरन्तर देखने को मिलती हैं यह प्रकिया व्यक्ति और समुह को स्थायी अथवा अस्थायी रूप से स्थान विशेष मे प्रवास की प्रवृत्ति को इंगित करती है और इस प्रकिया ने सदैव सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता को बढावा देकर सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है। यदि हम मानव समाज के प्राचीन इतिहास को देखे तो एक सामाजिक घटनाक्रम के रूप मे यह प्रकिया सदैव प्रचलित रही है। समय और समाज के स्वरूप मे परिर्वतन के साथ सामाजिक गतिशीलता भी परिवर्तित होती गई। टायनबी के अनुसार सामाजिक परिवर्तन की यर्थाथता संस्कृति और सभ्यता के प्रभाव से निर्देशित सामाजिक सरंचना की रूपरेखा को स्थापित करती है। आव्रजन और सामाजिक गतिशीलता, बाहय

सस्कृतियों के प्रभाव से उत्पन्न परिस्थितियों, राजनीतिक उलटफेर, युद्व की सम्भावनाओं तथा प्राकृतिक विपन्नताओं से भी सह सम्बन्ध दिखलाई देता है। पी. सोरोकिन, ने जहां भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता की बात की है। वहां पर आव्रजक प्रवासी के सामन्जस्य और समायोजन की कला को सुनियोजित किया हैं ।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध मे हमारा उद्वेश्य प्रवास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना है जो भारतीय समाज को प्रभावित करते है। प्रवास और सामाजिक विकास किस प्रकार सम्बन्धित है। प्रवासियों की क्या समस्याएं है। प्रवासी समस्या के समाधान के क्या सुझाव है आदि बिन्दुओं का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य मे देखना है।

विषयविस्तार

विश्व के समाजों मे संस्कृति और सभ्यता का विकास एक सहगामी प्रकिया के रूप में दृष्टिगत रहा है। आवास और प्रवास का स्वरूप मानव विकास के विभिन्न कालो मे सम्पूर्ण विकास के लिए एक चुनौती देता रहा है। इसी चुनौती के परिणामस्वरूप विभिन्न समाजो का विकास होता रहा है। मैक्स वेबर के अनुसार नगरीय समाज सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विभिन्नताओ का मिश्रण है ऐसे स्थानो पर कृत्रिमता, व्यक्तिवादिता, प्रतिस्पर्द्वा और घनी जनसंख्या के कारण नियंत्रण के औपचारिक साधनो के द्वारा संगठन की स्थापना होती है। इसी स्थापना के स्वरूप ने नगरों की सामाजिक–सांस्कृतिक विशेषताओ को उजागर किया, जो उस स्थान पर रहने वाले मूल निवासियो के जीवन को भी प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप सभी ने अपने जीवन यापन और रहन सहन के स्तर को उच्च बनाने के प्रयास मे प्रवास का सहारा लिया । प्रवास सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता से पूणतया सम्बन्धित कारक है।

दीपक के. मिश्रा के अनुसार भारत मे अन्तराष्ट्रीय प्रवास की तुलना मे देश के विभिन्न भागों से प्रवास कहीं अधिक हुआ है। इस आन्तरिक प्रवास मे आर्थिक विकास, सामाजिक सम्ब्द्वता, शहरी विविधता का योगदान है। आन्तरिक प्रवास देश के आर्थिक एंव सामाजिक जीवन का अपरिहार्य घटक है। और राज्य की भूमिका विभिन्न प्रवासी श्रमिकों के अनेक पहलुओं को प्रभावित करती है। प्रवास किसी कारण विशेष के लिए, व्यक्ति जन्म स्थान को छोड़कर कहीं अन्यत्र बसने लगता है या रहने लगता है । उसे प्रवास कहा जाता हैं। भारत मे प्रवास को सन् 1881 की जनगणना में समाविष्ट किया गया था। देश मे 2011 की जनगणना के अनुसार आन्तरिक प्रवासी 45.36 करोड थे। जो उस समय कुल जनसख्या का 37 प्रतिशत है । सेन्टर फॉर स्टडिज ऑन डवलपिंग सोसायटीज के अनुसार 2020 मे भारत मे लगभग 65 मिलियन आन्तरिक प्रवासी हैं इनमे 33 प्रतिशत श्रमिक है। जो देश की अर्थव्यवस्था को समग्र रूप से प्रभावित करते है। प्रवास मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है। पहला– आन्तरिक प्रवास, जिसमें देश के अन्दर प्रवास विभिन्न राज्यों मे होता है। दितिय– अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास जिसमें देश के बाहर या अन्य देशों से देश के अन्दर प्रवास होता हैं।

भारत देश मे मुख्यतः आन्तरिक प्रवास की निम्न चार धाराएं है।

1. गांव से गांव की ओर
2. गांव से नगर की ओर
3. नगर से गांव की ओर
4. नगर से नगर की ओर

इन प्रवासो मे निम्न कारण हो सकते है–

1. विवाह के कारण प्रवास,
2. रोजगार के कारण प्रवास,
3. प्राकृतिक आपदा के कारण
4. उत्तम जीवन अवसर के लिए प्रवास आदि। मुख्यत प्रवास के कारणो को निम्न दो वर्गो बांटा गया है।

प्रतिकर्ष कारक

उपरोक्त कारको जैसे विवाह, रोजगार, प्रकृतिक आपदा आदि के कारण व्यक्ति जन्म स्थान, निवास स्थान छोडने के लिए मजबूर होता है प्रतिकर्ष कारक कहलाते हैं।

अपकर्ष कारक

धार्मिक स्थल, पर्यटक स्थल, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य सुविधाओं के कारण लोग किसी स्थान विशेष की ओर आर्कषित होते है तो वह अपकर्ष कारक कहलाते है।

उपरोक्त कारको के कारण देश के विभिन्न हिस्सों से लोग अलग अलग राज्यों मे प्रवास कर गए। इस प्रवास का भारतीय सामाजिक जीवन पर अभिन्न प्रभाव पडा है। आमतौर पर प्रवास को अर्थिक तत्वो से जोडकर देखा जाता है मगर प्रवास के सामाजिक, जनाकिंकीय, पर्यावरणीय परिणाम होते है। हम यहां प्रवास के सामाजिक परिणामो का उल्लेख करेंगे। प्रवास एंव सामाजिक विकास के सह सम्बन्ध को देखगें । विकास ऐसे परिवर्तनों को लक्षित करता है जो प्रगति की ओर उन्मुख रहते हैं। विकास एक सामाजिक प्रकिया है जिसका सम्बन्ध आर्थिक पहलु से है। सामाजिक विकास से तात्पर्य उन सम्बन्धों तथा ढाचें से है जो किसी समाज को इस योग्य बनाती है कि उसके सदस्यों की आवश्यकता को पुरा किया जा सके । प्रवास इस सामाजिक विकास की प्रकिया का महत्वपूर्ण घटक है। भारतीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) – देश में आन्तरिक प्रवासी कुल आबादी का 37 प्रतिशत है। जिसके सकारात्मक आर्थिक एंव सामाजिक परिणाम है। आर्थिक रूप से प्रवासी द्वारा भेजी गई राशि उस समाज के आर्थिक विकास की निर्धारक है। उस आय से उच्च जीवन स्तर, शिक्षा, गृह निर्माण, विवाह आदि पूर्ण होते हैं। वहां के लोगो का जीवन उच्च हो जाता हैं। शेखावाटी क्षेत्र में अधिसंख्य प्रवासी देश के विभिन्न हिस्सो मे रहते है जो भारतीय समाज के आर्थिक एंव सामाजिक विकास को गति प्रदान करते हैं। सामाजिक विकास वह प्रकिया है जिसके कारण अपेक्षाकृत सरल समाज एक विकसित समाज के रूप में परिवर्तित होता है।

प्रवास एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रघटना हैं। प्रवास अपने प्रभावित क्षेत्रों मे गुणात्मक एंव मात्रात्मक

परिवर्तन लाता है। मात्रात्मक परिवर्तन मे जनसंख्या संरचना, जन घनत्व मे वृद्वि, आयु, लिंग, साक्षरता सम्बन्धी परिवर्तन शामिल है। जबकि गुणात्मक परिवर्तन मे नये माहौल मे अनूकुलन, जीवन गुणवता, उच्च स्वास्थ्य सुविधाए, जीवन अवसर आते है। प्रवास का एक सकारात्मक परिणाम आर्थिक तत्व है। प्रवासियों के द्वारा अपने घर के लिए भेजी गयी राशि से उस क्षेत्र का आर्थिक विकास होता है। उस राशि से विवाह, भवन निर्माण, शिक्षा, कृषि यंत्रो की खरीददारी आदि किया जाता है। जिस प्रकार विदेशो से बहुत अधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है उसी प्रकार भारत देश के विभिन्न राज्यों मे अन्य राज्यों से अधिक धन राशि प्राप्त होती है जिससे वहां के आर्थिक विकास मे सफलता मिली है। और पुरे देश की बात करे तो जीडीपी का लगभग 3 प्रतिशत धन विदेशी मुद्रा के रूप मे प्राप्त होती है। जिससे देश मे आर्थिक विकास , उधोग, रोजगार आदि बढते है। विशेष कर शेखावाटी क्षेत्र मे लाखो प्रवासी विदेशो मे कार्यरत है। जो वहां से धन भेजते है। जिससे यहां लोगो का जीवन स्तर उच्च है। सामाजिक विकास के सूचकांक अच्छी स्थिति मे है। इसके साथ ही यहां का एक महत्वपूर्ण पहलू यहां के प्रवासी उधोगपति है। जो सैकडो वर्षों से शेखावाटी क्षेत्र के निरन्तर विकास मे लगे हुए हैं। ये औधोगिक घराने सम्पूर्ण देश– विदेश मे उधोग विस्तार के साथ साथ यहां अपने पूर्वजो के जन्मभूमि पर भी अनेक विकास कार्य किए। बिरला, पोद्दार, सेक्सरिया, जालान, टिबडेवाल, और भी औधोगिक परिवार यहां से है। यहां 100 वर्ष पूर्व ही अनेक बडी–बडी शिक्षण संस्थाएं स्थापित की गयी। पिलानी, झुन्झुनू मे विश्व स्तर की अभियांत्रिक संस्था स्थापित की गयी। जिससे शिक्षा के क्षेत्र मे शेखावाटी सिरमौर हो गया। सामाजिक विकास मे यह क्षेत्र आगे बढा।प्रवासियो द्वारा यहां अस्पताल बनाए गए। अनेक महत्वपूर्ण स्मारको का निर्माण करवाया गया। जिससे देश के पर्यटन के क्षेत्र मे इस क्षेत्र को पहचान मिली। इन सब कार्यो के अतिरिक्त यहां के प्रवासी समुदाय मे समय–समय पर अन्य सहायता पहुचायी है। जिसके कारण यहां आर्थिक, सामाजिक विकास द्रीव गति से हुआ। परिणामस्वरूप यहा शिक्षा स्तर, रोजगार, स्वास्थ्य की उतम दशा है। शेखावाटी क्षेत्र मे प्रवास के उपरोक्त सकारात्मक परिणामो को निम्न बिन्दु भी है– 1 प्रवास सामाजिक परिर्वतन के अभिकर्ता के रूप मे कार्य करता है। नयी तकनीक, शिक्षा, विकास आदि से जुडे विचार नगरो से गांव की ओर बढते है। 2 प्रवास विभिन्न संस्कृति के लोगो मे अर्न्तमिश्रण का कार्य करता है जिसके परिणामस्वरूप एक समायोजित संस्कृति का विकास होता है। 3. स्थानिय लोगो की मानसिकता मे बदलाव होता है। 4. प्रवास सामाजिक विकास की गति को बढाता है। इस प्रकार प्रवास समग्र रूप से किसी समाज को प्रभावित करने वाला तथ्य है। प्रवासन इस दृष्टि मे भी लाभदायक है कि लोग रोजगार, शिक्षा, व्यापार, बेहतर जीवन इससे प्राप्त करते है। इससे लोग एक दुसरे की संस्कृति, भाषा, ज्ञान–विज्ञान, तकनीक, कला आदि क्षेत्रो मे आदान–प्रदान करते है। सामाजिक क्षेत्र के अनेक मानकों मे बदलाव आता है। यद्यपि प्रवास से कई लाभ है लेकिन व्यक्ति एंव समाज स्तर पर इससे जुडी अनेक समस्याएं है यथा–

1. सांस्कृतिक मिश्रण एंव आर्थिक साधनो पर दबाव के कारण स्थानीय लोग इसका विरोध भी करते है।
2. असंतुलित पलायन के कारण कई समस्याएं उत्पन्न हुई– नयी जगह रोजगार तो मिला मगर आवास स्थिति प्रतिकुल थी।
3. सामाजिक सुरक्षा, चिकित्सा आदि की मुलभूत सुविधाएं इन्हें प्राप्त नही हो पाती है।
4. प्रवासी मजदूरो का पलायन भी एक बडी समस्या है।

बडी संख्या मे आन्तरिक प्रवास एंव इससे जुडी समस्याओ के परिणामश्वरूप देश मे भूमिपुत्र आन्दोलन शुरू हुआ। इसमे स्थानीय प्रान्तीयता का विकास हुआ और वहा के प्रवासियों मे वैधता संकट उत्पन्न हुआ। अपने देश मे ही अन्य राज्यो के प्रवासियों से हिंसा की घटनाएं होने लगी। गतवर्ष कोरोना महामारी के समय प्रवासी समस्याएं त्रासदी पूर्ण रूप से उभर कर सामने आयी। भारत मे असंतुलित प्रवास के कारण आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कई तरह की समस्याएं है। वर्तमान एक दो वर्षों मे प्रवासी मजदुरो की समस्याएं भयावह रूप मे सामने आयी है। इस समस्या के समाधान हेतु सरकार द्वारा कोई ठोस नीतिगत फैसला लेने मे काफी देर की गयी। प्रवास से जुडी इन विभिन्न समस्याओ का समाधान किस प्रकार हो इसके लिए नीतिगत प्रावधान के साथ–साथ सामाजिक सहभागिता भी आवश्यक है। इनकी समस्या का स्थायी समाधान खोजा जाए। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रो मे संसाधनो को बढाया जाए। छोटे और कुटीर उधोग ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ है इन्हे सक्षम बनाया जाए। ग्राम उदय से ही भारत उदय सम्भव है। प्रवसियों की विभिन्न समस्याओ के लिए विधिगत प्रावधान बढाए जाए। आवास व्यवस्था, स्वास्थ्य एंव शिक्षा आदि प्रवासी के नियोजनकर्ता की जिम्मेदारी है, वह इसे पूर्ण करे । साथ ही राज्य संतुलित विकास कर प्रवास को संतुलित बनाया जाय।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रवास सामाजिक गतिशीलता का स्वभाविक परिणाम हैं। यह आर्थिक विकास के साथ–साथ समाज मे अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन लाता है। उच्च जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि की तलाश मे प्रवास घटित होता है और व्यक्ति, समाज इन्हे बेहतर तरीके से प्राप्त भी करता है। सामाजिक विकास प्रवास का मुख्य परिणाम हैं। प्रवासियो की विभिन्न समस्याओ का समाधान इस प्रक्रिया को उत्तम बनाया जाए। वर्तमान वैश्वीकरण के दौर मे प्रवास निरन्तर बढाता जाता है और व्यक्तियो के विचार, समाजो की प्रकृति, सामाजिक भावना मे उत्कृष्ट परिवर्तन आता जा रहा है। इसे भी सामाजिक विकास माना जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *A.J. Tynbee, 'A Study of history' Oxford University Press, London, 1946.*
2. *P. Sorokin, 'Social And cultural Dynamics' Peter Owen, London, 1957.*
3. *Max Weber, "The City", collier Books (ed.), New York, 1962.*

4. *CSDS, Center for the Study of Developing Societies – Report 2020.*
5. *NSSO, National Sample Survey Office - Report 2017.*
6. *http://censuindia.gov.in.*
7. *www.researchgat.nat.in.*
8. *http://www.unesco.org.org.*
9. *जयराम, नारायण, '' द इण्डियन डायस्पोरा : डायनामिक्स ऑफ माइग्रेशन'' सेज प्रकाशन, नई दिल्ली 2004 ।*
10. *लक्ष्मी, एन काडेकर, अजय कुमार साहु , '' द इण्डियन डायस्पोरा : ऐतिहासिक और समकालीन संदर्भ '' रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली 2009 ।*
11. *दीपक के मिश्रा, '' समकालिन भारत मे आन्तरिक प्रवास'' सेज प्रकाशन, नई दिल्ली 2016 ।*
12. *राज. पत्रिका – ''शेखावाटी के प्रवासी'' 2021 ।*